वाचक प्रमोदचन्द्र भास

सं. म. विनयसागर

संग्रहगत स्फुट पत्रों में यह एक-पत्रात्मक कृति प्राप्त है । साईज २४ x १० x ५ से.मी. है । पंक्ति १५ है और अक्षर ४३ से ४६ है । प्रति का लेखन सं. १७४५ है । इस कृति के कर्ता करमसीह हैं, जो सम्भवतः वाचक प्रमोदचन्द्र के शिष्य हो या भक्त हो । इस कृति का महत्त्व इसलिए अधिक है कि वाचक प्रमोदचन्द्र का स्वर्गवास वि. संवत् १७४३ में हुआ था और यह पत्र १७४५ में लिखा गया है । सम्भवतः लेखक का वाचकजी के साथ सम्बन्ध भी रहा हो । इस भास का सारांश निम्नलिखित है :-

भासकार करमसीह जिनेन्द्र भगवान् और प्रमोदचन्द्र वाचक को नमन कर कहता है कि इनके नाम से पाप नष्ट हो जाते हैं और निस्तार भी हो जाता है । वाचक प्रमोदचन्द्र का जीवनवृत्त देते हुए लेखक लिखता है - मरुधर देश में रोहिठ नगर है, जहाँ ओसवंशीय तेलहरा गोत्रीय साहा राणा निवास करते हैं और उनकी पत्नी का नाम रयणादे है । इनके घर में विक्रम संवत् १६७० में इनका जन्म हुआ और माता-पिता ने इस बालक का नाम पदमसीह रखा । श्रीपूज्य जयचन्द्रसूरि वहाँ पधारे । साहा राणा ने अपने पुत्र प्रमोदसीह के साथ विक्रम संवत् १६८६ में दीक्षा ग्रहण की । दीक्षा का महोत्सव जोधपुर नगर में हुआ । निरतिचार पञ्च महाव्रत का पालन करते हुए राणा मुनि का स्वर्गवास वि.सं. १७०० में हुआ । पदमसीह मुनि श्रीजयचन्द्रसूरि के शिष्य थे । सम्भवतः इनकी माता ने भी दीक्षा ग्रहण की और लखमा नाम रखा गया । मुनि पदमसीह वि.सं. १६३१ में वाचक बने, वि.सं. १७४३ में मुनि पदमसीह अन्तिम चातुर्मास करने के लिए जोधपुर आए और उन्होंने अनशन ग्रहण किया । ढ़ाई दिन का अनशन पाल कर पोष दशमी सम्वत् १७४३ में इनका स्वर्गवास हुआ । देवलोक का सुख भोगकर अनुक्रम से भव-संसार को पार करेंगे । प्रमोदचन्द्र १६ वर्ष गृहवास में रहे, ४५ वर्ष ऋषिपद में रहे और १२ वर्ष तक वाचकपद को शोभित किया । इनकी पूर्ण आयु ७३ साल थी । इन्हीं के चरण सेवक करमसीह

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ने यह भास लिखा है ।

नागपुरीय तपागच्छ पट्टावली के अनुसार भगवान् महावीर से ६२वें पट्टधर श्रीजयचन्द्रसूरि हुए । यह बीकानेर निवासी ओसवाल जेतसिंह और जेतलदे के पुत्र थे । वि.सं. १६७४ में राजनगर में इन्हें आचार्यपद मिला था और वि.सं. १६९९ आषाढ़ सुदि पूनम को जयचन्द्रसूरि का स्वर्गवास हुआ था ।

इस पट्टावली के अनुसार यह निश्चित है कि वाचक प्रमोदचन्द्र ऋषि नागपुरीय तपागच्छ/पार्श्वचन्द्रगच्छीय थे और श्रीजयचन्द्रसूरि के शिष्य थे । श्रीजयचन्द्रसूरि के पट्टधर श्रीपद्मचन्द्रसूरि (आचार्य पद १६९९ और स्वर्गवास १७४४) ने ऋषि पदमसीह को सम्वत् १७३१ में आचार्य पद प्रदान किया था ।

वाचक प्रमोदचन्द्र की कोई रचना प्राप्त नहीं है । इनके सम्बन्ध में और कोई जानकारी प्राप्त हो तो पार्श्वचन्द्रगच्छीय मुनिराजों से मेरा अनुरोध है कि वे उसे प्रकाशित करने का कष्ट करें ।

इस भास के दूसरी और मिष्टान्नप्रिय जोध नामक यति ने नागौर की प्रसिद्ध मिठाई पैडा का गीत १५ पद्यों में लिखा है ।

॥ ढाल-अलवेला री ॥

श्री जिन पय प्रणमी करी रे लाल । गाइस गुरु गुणसार, सुखकारी रे ।
श्री प्रमोदचंद वाचकवरु रे लाल । नाम थकी निसतार ॥ सु० १ ॥

श्री प्रमोदचंद पय प्रणमीयइ रे लाल । नाम थकी निसतार । सु० ।
सुख संपति सहितै मिलै रे लाल । दरसण दुरित पुलाई ॥ सु० २ ॥

मरुधर देस सुहामणौ रे लाल । रोहिठ नगर विख्यात । सु० ।
साह रांणा कुल चंदलौ रे लाल । रयणादे जसु मात ॥ सु० ३॥

सौलैसै सितरै समै रे लाल । जनम दिवस सुद्ध मास । सु० ।
मात पिता हरखै घणुं रे लाल । उछव करै उल्हास ॥ सु० ४ ॥

बीया चंद तणी परै रे लाल । वधता बहु गुणवंत । सु० ।
पदमसीह मुख पेखता रे लाल । सजन सहु हरखंत ॥ सु० ५ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रीपूज्य पधार्या प्रेमसुं रे लाल । श्री जयचन्द सूरिन्द । सु० ।
साह रांणौ वयरागीया रे लाल । पुत्र पुत्र सु आणंद ॥ सु० ६ ॥

जोधपुर नगर सुहामणौ रे लाल । दिक्षा महोछव सार । सु० ।
संघ जीमावी हरखसुं रे लाल । विलसी धन विस्तार ॥ सु० ७ ॥

पंच महाव्रत पालता रे लाल । चारित्र निरतिचार । सु० ।
रांणै मुनि सुरगति लही रे लाल । सतरसईकै सार ॥ सु० ८ ॥

श्री पदमसीह मुनि परगडा रे लाल । श्री जयचंदसूरि सीस । सु० ।
सोहै लखमां साधवी रे लाल । शिख शिखणी सुं जगीस ॥ सु० ९ ॥

महिमंडल विचरता रे लाल । तारण तरण जिहाज । सु० ।
सुमति गुपति व्रतधर सदा रे लाल । साधु गुणे सिरताज ॥ सु० १० ॥

नयर जोधाणै आवीया रे लाल । जांणी चरम चोमास । सु० ।
सतरतयाल संवछरै रे लाल । श्रीमुख अणसण जास ॥ सु० ११ ॥

अढी दिवस पाली करी रे लाल । पोस दिसम जगिसार । सु० ।
सुरगति सुर सुह भोगवै रे लाल । अनुक्रमि भवनौ पार ॥ सु० १२॥

सोल वरस गृहवास मै रे लाल । रिख पद वरस पैताल । सु० ।
बार वरस वाचक पदै रे लाल । सर्वायु तिहोत्तर पाल ॥ सु० १३॥

धन ओसवंश अतिदीपतौ रे लाल । धन तेलहरा गोत । सु० ।
मात पिता धन जनमीया रे लाल । धन सुगुरु जगि जोत ॥ सु० १४ ॥

चरण कमल सेवक भणै रे लाल । प्रणमुं बे कर जोडि । सु० ।
करमसीह कृपा करी रे लाल । पूरौ वंछित कोडी ॥ सु० १५॥

इति श्रीप्रमोदचंद्रवाचकभास सम्पूर्णः सं १७४५ वर्षे लिखतं पं. श्री आसकरण जी ।

कठिन शब्दों के अर्थ :

वाचकवरु	वाचक-श्रेष्ठ
राणा	प्रमोदचन्द्र के पिता का नाम
रयणादे	प्रमोदचन्द्र की माता का नाम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सौलेसै सितरै	विक्रम संवत् १६७०
बीया चंद	द्वितीया के चंद्र के समान
सतरसईकै	संवत् १७००
सतरतयाल	संवत् १७४३
रिख	ऋषि
तेलहरा	ओसवाल जाति का एक गोत्र

C/o. प्राकृत भारती
१३-ए. मेन मालवीयनगर
जयपुर-३०२०१७

★★★

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org